प्रेस विज्ञप्ति

28 नवंबर, 2016

<u>श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला, मीडिया प्रभारी, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने निम्नलिखित बयान जारी किया</u> :–

प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी के आनन फानन में लिए गए एक फैसले ने पूरे देश की अर्थव्यस्था का पहिया जाम कर दिया है। मोदी सरकार ने नोटबंदी नहीं की है, बल्कि देशबंदी लागू कर दी है, पूरे देश की अर्थव्यवस्था की बंदी, नौकरियों, कारोबार एवं व्यापार की बंदी, कामगार बंदी व खेती और ग्रामीण विकास की बंदी कर दी है। देश के लोग आक्रोश में हैं और कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में 'जन आक्रोश दिवस' के साथ आज सरकार के इस फैसले का जोरशोर से विरोध कर रहे हैं। अर्थव्यवस्था के विकास की गति रोकने के लिए देश से मॉफी मांगने की जगह प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी भारत के लोगों का मजाक बना रहे हैं। चुनावी आंकड़ों के अभिमान में मोदी जी देश के 125 करोड़ लोगों की तकलीफ और क्रोध को भी नहीं देख पा रहे हैं, जो अपनी रोजी–रोटी छिन जाने से असुरक्षित और डरा हुआ महसूस कर रहे हैं। जैसा कि भूतपूर्व प्रधानमंत्री, डॉ. मनमोहन सिंह ने संसद में कहा कि नोटबंदी देश की जनता को 'एक सुनियोजित एवं कानूनी तरीके से लूटने' का तरीका है।

नोटबंदी स्वतंत्र भारत का एक ऐसा बड़ा घोटाला है, जिसने एक तानाशाही फैसले की वजह से देश के 125 करोड़ लोगों पर मुसीबतों का पहाड़ तोड़ दिया है। कांग्रेस पार्टी; कांग्रेस उपाध्यक्ष, श्री राहुल गांधी के नेतृत्व में अन्य विपक्षी दलों के साथ पूरा विपक्ष 'ज्वाईंट पार्लियामेंटरी कमेटी' (जेपीसी) द्वारा इस पूरे घोटाले तथा साजिश की जांच कराए जाने की मांग कर रहा है।

प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी संसद में चुप्पी साधे रहते हैं। परंतु वो रॉक कॉन्सेर्ट में मुखर हो उठते हैं, 'मन की बात' आनंद लेकर करते हैं, राजनैतिक रैलियों में चटखारे लेकर बोलते हैं। वो अभिनय कर सकते हैं, लोगों की तकलीफ पर हंस सकते हैं, पर जैसे ही उनसे जवाब मांगा जाता है, तो मगरमच्छी आंसू बहा देते हैं। उनके पास लोकतंत्र के मंदिर, यानि संसद में जवाब देने का बिल्कुल भी समय नहीं है। अब वक्त आ गया है, जब श्री नरेंद्र मोदी को निम्नलिखित महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर देने चाहिए :–

1. बैंकों के बाहर लाईन में खड़े लोग न चोर हैं और न उनके पास काला धन है। सरकार को बताना होगा कि इनमें से कौन चोर है और किसके पास काला धन है। सच तो यह है कि मोदी सरकार ने पूरे देश को ही अपराधी घोषित कर दिया।
2. **देश के लोगों को अपने खाते से अपनी खुद की कमाई के पैसे नहीं निकालने दिए जा रहे हैं?** कोई भी कानून लोगों को अपना पैसा निकालने से नहीं रोक सकता। श्री नरेंद्र मोदी की भाजपा सरकार का यह फैसला भारत के संविधान का उल्लंघन करता है।
3. पिछले 19 दिनों में 80 बेकसूर नागरिक मौत के मुंह में धकेल दिए गए। उनका क्या कसूर था? मृतकों की सूची संलग्नक A-1 में संलग्न है।

4. मोदी सरकार ने पिछले 19 दिन में 105 बार नोटबंदी के नियमों पर फैसला बदला है, जिसकी सूची Annexure A2 संलग्न है। पूरे देश पर नोटबंदी से संबंधित नियमों एवं फैसलों में हर घंटे हो रहे बदलावों के चलते मुसीबतों का पहाड़ टूट गया है। इसे कहते हैं, "नाच न जाने आंगन टेढ़ा"।

5. न बैंकों में कैश है और न एटीएम में नोट। छोटे शहरों एवं गांवों के ज्यादातर बैंकों में प्रतिदिन केवल 4 लाख रु. से 5 लाख रु. के करेंसी नोट ही पहुंच पा रहे हैं। जो लोग पैसे निकालना चाहते हैं, उन्हें घंटों लाईन में खड़े होने के बाद भी खाली हाथ वापस जाना पड़ रहा है, क्योंकि सारे नोट दोपहर 12 बजे तक खत्म हो जाते हैं।

6. प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने पूरे देश में खेती–बाड़ी को पंगु बना दिया है। सबसे बड़ा मुसीबतों का पहाड़ किसान व खेत मजदूरों पर टूटा है। बगैर जाने, सोचे व समझे एक तुगलकी तरीके से सभी 'कोऑपरेटिव बैंक्स', 'ग्रामीण विकास बैंक्स', 'प्राईमरी लैंड डेवलपमेंट बैंक्स' व 'कोऑपरेटिव क्रेडिट सोसायटीज़' पर नोट बदलने या नए नोट देने पर रोक लगा दी गई है। एक झटके में समूचे खेती–बाड़ी के कारोबार की कमर तोड़ दी। नतीजा सामने है। उत्तरप्रदेश और महाराष्ट्र में न गन्ने की कटाई हो रही, न लदान और न पिराई। रबी की फसलें यानि गेहूं, जौ, चना, आलू इत्यादि के लिए न बीज का पैसा है, न खाद का और न ही मजदूर को देने का।

7. नोटबंदी के चलते काम न होने से छोटे और मध्यम उद्योग बंद हो रहे हैं और बेरोजगारी बढ़ रही है। पिछले 20 दिनों लेदर उद्योग में ही लगभग 2.5 लाख कर्मचारी अपनी नौकरी खो चुके हैं, जबकि ज्वेलरी उद्योग में 20 फीसदी कर्मचारी इस फैसले का शिकार हुए हैं।

8. भारत में कुल 90 प्रतिशत का योगदान देने वाला अनौपचारिक क्षेत्र नोटबंदी के फैसले से सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। गलियों में बेचने वाले फेरीवाले, रेहड़ी पटरी वाले, खाने–पीने के खोमचे, बढ़ई, नाई, धोबी, कारीगर, बिजली कारीगर, रिपेयरमैन, प्लंबर, ब्लैकस्मिथ, पोर्टर एवं अन्य कारीगर, कपड़े के व्यापारी, किराना दुकान मालिक, बेकरी, सब्जीवाले और सब्जी के व्यापारी, अनाज के व्यापारी और विक्रेता, छोटे व्यापारी एवं शॉपकीपर्स आदि सभी इस फैसले से प्रभावित हैं। चूंकि देश में केवल 53 फीसदी लोगों के पास ही बैंक खाते हैं, मोदी सरकार ने अनौपचारिक क्षेत्र में चलने वाली नकद की ईमानदार अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से क्षत–विक्षत कर दिया है।

9. प्रधानमंत्री जी को तो यह भी नहीं पता है कि 125 करोड़ लोगों के इस देश में केवल 2.4 करोड़ लोगों के पास क्रेडिट कार्ड तथा 9 करोड़ लोगों के पास डेबिट कार्ड है। इनमें से कई व्यक्तियों के पास एक से ज्यादा कार्ड हैं। इन कार्ड्स से प्रतिदिन केवल 48 करोड़ लेनदेन होती हैं, जिनकी कुल राशि 2293 करोड़ रु. है (आरबीआई द्वारा जून, 2016 की रिपोर्ट के अनुसार)। यदि इस घोषणा के बाद मोबाईल वॉलेट्स 500 फीसदी बढ़े, तो इनके द्वारा की गई लेनदेन की राशि 11,000 करोड़ रु. होगी, जो कि निकाले गए नकद के सामने कुछ भी नहीं है। हमारे देश में ज्यादातर लेन–देन, व्यापार, कारोबार दैनिक जरूरतों के लिए नकद में किया जाता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह सारा लेनदेन गैरकानूनी या काले धन से हो रहा है। यह एक प्राचीन परंपरा के तहत ईमानदार कारोबार का हिस्सा है, जो इस देश में एक रोजमर्रे का चलन है। श्री नरेंद्र

मोदी ने रातोंरात एक फरमान जारी करके इस नकदी लेन देन की व्यवस्था को आघात पहुंचाकर व्यापारियों, कारोबारियों और आम आदमी की जीविका छीन ली है।

10. नोटबंदी से देश की आय पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा, इससे देश की जीडीपी में 2 से 3 प्रतिशत की गिरावट आ जाएगी, निजी निवेश में रुकावट आएगी (जो मोदी सरकार के दो साल के काम में लगातार गिरा है) और अर्थव्यवस्था से पैसा गायब हो जाएगा।

आज इस देश को इन महत्वपूर्ण प्रश्नों के जवाब चाहिए :–

2014 के लोकसभा चुनावों से पहले श्री नरेंद्र मोदी ने 100 दिनों के भीतर विदेशों में जमा 80 लाख करोड़ रु. का कालाधन देश में लाने और हर भारतीय के खाते में 15 लाख रु. जमा कराने का वायदा किया था। आज लगभग 1000 दिन पूरे हो चुके हैं, पर अब उनका यह वायदा एक जुमला मात्र बनकर रह गया है।

अब मोदी जी ने देश के लोगों के हाथ से नोट खींचकर उन्हें नया जुमला पकड़ा दिया है कि वो 50 दिनों के भीतर इस नए उत्पन्न संकट खत्म कर पाएंगे।

मोदी जी, देश जुमलों से नहीं, जिम्मेदारी निभाने से चलेगा।